मार्गदर्शक हैं ये किताबें

डेविड ऑसबरॉ की पाठ्यपुस्तकों का एक और विहंगावलोकन

❑ हृदयकांत दीवान

डेविड ऑसबरॉ की पाठ्यपुस्तकों पर यह लेख पिछले अंक (अगस्त/सितम्बर, 1998) के लिए तैयार किया गया था जो डेविड ऑसबरॉ और नीलबाग पर केन्द्रित सामग्री के साथ प्रकाशित होना था । किन्तु यह हमें विलंब से मिला और गतांक में नहीं जा सका । तथापि हमारा मानना है कि 'विमर्श' के पाठक इसे गतांक से जोड़कर पढ़ सकेंगे । डेविड की पुस्तकों पर यह एक और दृष्टि है जो उनकी महत्ता और विशिष्टता को रेखांकित करती है । हृदयकांत दीवान स्वयं एक लंबे अर्से से बच्चों के लिए पुस्तक तैयार करने के काम से जुड़े रहे हैं, ऐसी स्थिति में उनकी राय का खास मतलब भी है । आगे भी बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों पर हर कोण से चर्चा का हम स्वागत करेंगे ।

डेविड ऑसबरॉ की किताबों के बारे में बात शुरू उनके शीर्षकों से ही करना उचित होगा । किताबों के शीर्षकों के कुछ उदाहरण हैं – ''सोचना और करना'' (थिंकिंग एंड डूइंग), ''चलो हम विज्ञान खोजें'' (लेट'स डिस्कवर साइंस), ''जीने के बारे में सीखना'' (लर्निंग अबाउट लिविंग) । सभी शीर्षक गतिशील हैं और बच्चे के (सीखने वाले के) दृष्टिकोण पर केन्द्रित हैं । शीर्षक पढ़कर ही इसके पाठ्य पुस्तक होने का आभास नहीं होता और न ही किसी ऐसी चीज का जो दोहराए जाने वाले अभ्यासों से भरी वर्क बुक (कार्य–पुस्तक) के समान हो ।

''चलो हम विज्ञान खोजें'' शीर्षक के पीछे एक दर्शन है, बच्चे के केन्द्र में होने का, खोजी होने का व ज्ञान का सृजक होने का । यह शीर्षक विज्ञान सीखने का नहीं है, इसमें मात्र इतनी बात नहीं है कि बच्चों को गतिविधियां या प्रयोग दिखाकर सिखा दें । जो सिखाने वाला चाहता है उसके लिए प्रयोग बनाएं और बच्चों को दिखायें या करवाएं और उचित निष्कर्ष बता दें, जो पहले से तय हैं । विज्ञान खोजने के पीछे और ही मंशा है और इसमें बच्चा (सीखने वाला) प्रमुख है। जो जानना है वह पूरी तरह तय नहीं है और बदल सकता है । इसमें शिक्षक और बच्चे के संबंधों के बारे में भी एक संदेश है, दोनों मिलकर खोजेंगे । शिक्षक ज्ञान का भंडार व दाता नहीं है बल्कि बच्चे के साथ सीखने वाला है ।

''जीवन के बारे में सीखना'', ''जीना सीखना'' और जाने कितने और संभव शीर्षकों से तुलना करें तो एक बात यह लगती है कि जीने के बारे सीखना एक ऐसा नाम है जो सीखने वाले को बांधता नहीं, उपदेश नहीं देता और तथ्यों से बहुत ठुंसा होने का आभास नहीं देता ।

डेविड ऑसबरॉ की किताबें उठा कर खोलते ही उनमें खुलेपन का अहसास होता है । उनके स्वरूप से ही लगता है कि वह बच्चे को कुछ करने को उकसा रही हैं, उसे निष्क्रिय नहीं रहने देना चाहती। उन्हें पाठ्यपुस्तकें नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह सामान्य पाठ्य-पुस्तकों के समान भरी-भरी सी और अपने अपने आप में संपूर्ण नहीं लगती । उन्हें कार्य-पुस्तकें नहीं कह सकते क्योंकि सामान्य कार्य पुस्तकें बच्चों को सिर्फ निर्देश देती है, एक ही क्रिया को बहुत बार दोहराने की ।

डेविड की किताबों में जो स्कूल की और सीखने के तरीके की कल्पना है, वह सामान्य पाठ्य-पुस्तकों से बहुत अलग है । सामान्यत: पाठ्यपुस्तक बच्चे को जानकारी देती हैं, समझाती हैं, सही उत्तर बताती हैं और कहती हैं यदि तुम ऐसा करो तो देखोगे कि ऐसा होगा। डेविड की किताब बहुत जानकारी नहीं देती, बच्चे को कहती है कि तुम करो और मुझे बताओ कि क्या हुआ, तुम खोजो, पता करो और समझो । यह अन्तर डेविड की किताबों व सामान्य पाठ्य–पुस्तकों के हर टुकड़े से दिखता है । डेविड की किताबों की सामग्री का चुनाव, भाषा व प्रस्तुति चाहे वह तथ्य हों, तर्क हो या निर्देश हों, इस प्रकार रखी गई हैं कि वह बच्चे को रोचक लगे व उसे बच्चा पढ़ कर समझ सकें । किसी भी किताब की भाषा के बारे में बात करते समय इसकी विषय-वस्तु को अलग करना मुश्किल होता है और हम इनकी विषय-वस्तु के बारे में भी विस्तार से चर्चा कर सकते हैं । किन्तु सिर्फ लिखने के लहजे व भाषा के प्रकार और उसकी गुणवत्ता को ही देखें तो कुछ बातें स्पष्ट दिखती हैं :

1. डेविड ने किताबें इस प्रकार लिखने का प्रयास किया है कि उन्हें बच्चा स्वयं पढ़कर समझ सके । पूरी किताब बच्चे को

संबोधित है और वह भी एक मित्रता के लहजे में, एक स्वभाविक बराबरी के संबंध के लहजे में ।

2. इन किताबों के चित्रों के बारें में कई बातें उल्लेखनीय हैं, एक बात यह है कि लिखते समय यह ध्यान रखा गया है कि चित्रों का उपयोग लिखित भाषा को पढ़ने में मदद देता है, उनमें ऐसा अर्न्तसंबंध है कि कम शब्दों में और कम जटिल व्याख्याओं के साथ चित्रों को जोड़ कर कई मुश्किल अवधारणाओं का अहसास दिया गया है ।

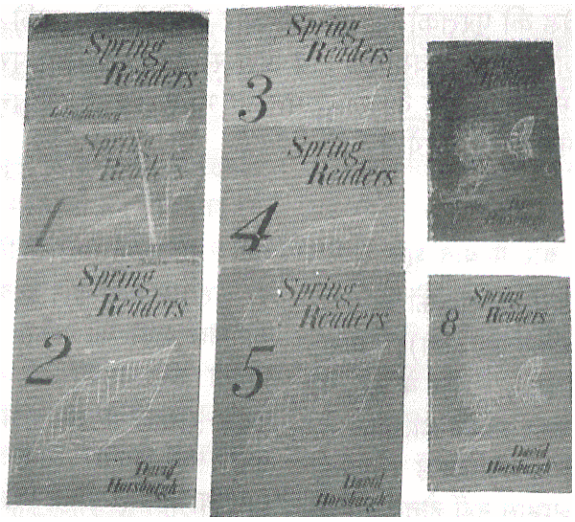

3. ऐसा नहीं है कि किताब में नये शब्द नहीं हैं या तर्क नहीं हैं और उसमें सिर्फ अस्वाभाविक रूप से रचे गये छोटे-छोटे शब्दों वाले छोटे-छोटे वाक्य हैं, लेकिन किताब को स्वाभाविक तौर पर बच्चे के लिए लिखा गया है जिससे बच्चा किताब के संदर्भ से नए शब्द सीख सके, निर्देश समझ कर खुद काम कर सके ।

4. किताबों में एक बात और दिखती है, इनमें लिखित सामग्री और चित्रों का अनुपात व इन दोनों को मिलाकर खाली जगह से अनुपात सामान्य पाठ्य–पुस्तक से बहुत फर्क है । ऑसबर्ॉ की हर किताबों के सैट (सीरीज) में यह धीरे-धीरे बदलता जाता है। यह भी बदलता है कि हर पन्ने पर कितने नये शब्द हैं किन्तु यह बढ़ना भी स्वाभाविक रूप से बच्चे के लिए लिखा लगता है, जो सामान्य पाठ्यपुस्तक से बहुत अलग है ।

अगर इस बात को सोचें कि यह किताबें बच्चे को क्या मानती हैं तो एक बात साफ दिखती है कि यह किताबें बच्चे को एक स्वतंत्र सीखने वाला मानती हैं, उसे सोचने के, समझने के व नई चीजें बनाने के लिए सक्षम मानती हैं । वह बच्चे की इन क्षमताओं को नजरअंदाज कर दोहरवाना देना और बताना महत्वपूर्ण नहीं मानतीं ।

जैसे इंजिन के बारे में जो इकाई है, उसमें दो वाहन हैं, दो तरह के इंजिन का चित्र है और सवाल है कि आप जो भी इंजिन जानते हैं उनकी सूची बनाएं । इसके लिए इन शीर्षकों का इस्तेमाल करें: भाप, पेट्रोल, तेल, बिजली । फिर एक भाप के इंजिन का मॉड़ल बनाने के निर्देश हैं । जो इंजिन के चित्र हैं उनमें से एक में तीर के निशान भी लगे हैं ।

इसमें कई बातें हैं, पहली ये आवश्यक नहीं है कि सभी बच्चे एक ही तरफ सोचें और न ही यह कि हर कक्षा में एक-सी प्रक्रिया हो; दूसरी यह कि ऐसा दबाव नहीं है कि कोई बात याद ही कर लेनी है या कोई परिभाषा समझ ही लेनी है । यह भी अपेक्षा नहीं कि बच्चे को यह समझ में आए कि तीरों के निशान क्या दर्शा रहे हैं पर यह जरूर है कि बच्चा इनसे जूझेगा, कुछ समझेगा, कुछ नहीं समझेगा और जूझता बाद में समझेगा । पर इतना जरूर हो गया कि बच्चे का, उस पाठ से, उस बात से जुड़ाव बन गया और वह एक रोचक जानी जा सकने वाली चीज बन गई । इसी उदाहरण की तरह ही लगभग अधिकांश पन्नों के बारे में व्याख्या दी जा सकती है, उनकी संभावनाओं को टटोला जा सकता है ।

हर पन्ने पर इसी तरह के पूरे अभ्यास जिन्हें आप वर्षो के अंतराल के बाद भी कई बार कर सकते हैं और हर बार आप और नई बातें सीखेंगे ।

किताब के हर पन्ने में जगह है बच्चे के लिए :

- सोचने की, ढूंढ़ने की ।

- अपनी बात बताने की- चित्र में, लिखकर, साथियों से चर्चा में अपने अनुभव को जोड़ कर उसे शामिल करने की, अपने आस-पास को ज्यादा बारीकी से देखने की ।

- समस्या हल करने की प्रयास की ।

- पढ़कर समझने की, चित्र समझने की व उससे अवधारणा समझने की ।

- अपने हाथ से कुछ बनाने की । आस-पास बिखरी सामग्री का उपयोग सीखने की ।

- कई चीजों का अनायास ही अभ्यास करने की, बगैर उनके बारे में ज्यादा चिन्तित हुए ।

वैसे तो इनमें से हर बात महत्वपूर्ण है और उसे विस्तार से समझाने से ही पूरा दर्शन स्पष्ट होगा किन्तु इस सब में जो एक खास बात लगती है वह यह है कि सीखना कोई क्रमिक, पहले से प्रोग्राम किया हुआ यांत्रिक कार्य नहीं हैं । स्वाभाविक परिस्थितियां जिनमें बच्चों के लिए शामिल होने के मौके हों, में ही वह सीख सकता

है। अगर वह तनाव में है और सीखने वाली सामग्री के बोझ से दबा है तो वह आसानी से सीख नहीं पाएगा, जबकि घर में स्वाभाविक रूप से वह बहुत कुछ सीख लेता है ।

डेविड की किताबें बहुत वैज्ञानिक, बहुत क्रमबद्ध और सीखने के पूर्व निर्धारित व अपेक्षित क्रम के आधार पर बनी पुस्तकों पर एक बहुत सटीक प्रश्न चिन्ह लगाती है । इन किताबों में लचीलापन, एक निश्चित क्रम से बंधनमुक्ति और खुलापन है : कई संभव दिशाओं से, कई संभव दिशाओं में बढ़ने का, और हर बच्चे के लिए अपने ढ़ंग से पन्ने पर कुछ करने की जगह है व अपने ढंग से और सीखने की भी ।

डेविड की किताबें स्वाभाविक परिस्थितियां निर्मित करने की कोशिश करती हैं । वे सीखने के विषयों में बंटी नहीं है और वह सब सामने रखती हैं जिससे कि उस परिस्थिति में बच्चा जूझ सकता है। इसमें हर पन्ने पर सभी विषय करवाने की भी कोशिश नहीं लगती, जिस पर जो अभ्यास करवाया जा सकता है वही अभ्यास रखा है ।

डेविड की किताबों पर बात सिर्फ उनके स्वरूप पर आधारित नहीं है, ऐसा कई बातों से लगता है । वे रंगीन, चिकनी जिल्द वाली नहीं हैं, किताब के अंदर भी रंगीन चित्र नहीं है । यह सवाल सोचने के लिए अच्छा है कि डेविड ने ऐसा क्यों किया? दूसरी तरफ स्वरूप के अलावा किताब में कई बातें हैं जो शिक्षा के दर्शन से जुड़ी हैं। जैसे बच्चे और शिक्षक का संबंध, बच्चे और पुस्तक का संबंध, बच्चे व स्कूल का संबंध, स्कूल व परिवेश का उपयोग, बच्चे के उत्साह सृजन व कल्पना का स्कूल में उपयोग व शिक्षा की बच्चे के विकास में भूमिका आदि । इसमें यह भी परिलक्षित होता है कि हम बच्चे को क्या बनाना चाहते हैं व उसका कैसा संबंध परिवेश में जोड़ना चाहते हैं ।

आखिर में एक और बात कहना जरूरी है । डेविड की किताबों में जगह की समझ व उससे संबंधित सभी क्रियाओं व परिवर्तनों पर बहुत जोर है । चित्र में परिप्रेक्ष्य समझना, विभिन्न तरह के चित्र समझना व बनाना (नामांकित चित्र, तीर वाले चित्र भी) नक्शे समझना व बनाना, लिखित सामग्री का चित्रों व नक्शों से संबंध आदि पर जोर है । एक ऐसा क्षेत्र जिसे बिल्कुल ही छोड़ दिया जाता है उस पर बहुत ध्यान दिया गया है । डेविड ने स्पेस से संबंधित क्षमताओं का विकास करने के लिए बहुत से भूलभुलैया भी शामिल किए हैं । कुल मिलाकर यह किताबें एक भिन्न तरह के स्कूल की कल्पना से प्रेरित हैं और उस दिशा में एक सक्षम प्रयास भी । आज के संदर्भ में सब जगह बच्चों को केन्द्र में रखने की बात हो रही है, उन्हें सोचने व जगह देने की बात है और सीखने की स्वाभाविक परिस्थितियों का नाम जोर शोर से लिया जा रहा है, यह किताबें हमारे लिए मार्गदर्शक हो सकती हैं ।

यह किताबें किन्तु एक अलग शिक्षण व्यवस्था की भी मांग करेंगी, जिसमें मूल्यांकन, शिक्षक व पुस्तक का संबंध, शिक्षक को स्वतंत्रता व लचीलापन, शिक्षक प्रशासन संबंध, शिक्षक प्रशिक्षण, कक्षा का ढांचा, स्कूल के अनुशासन का अर्थ, सीखने का अर्थ आदि सभी महत्वपूर्ण सवालों पर धीरे धीरे सोच बनानी पड़ेगी व इनमें परिवर्तन करना पड़ेगा । पर क्या यह सब अब जरूरी नहीं है?

अगर यह सब पढ़कर आप सोचें कि यह तो समीक्षा के स्थान पर विज्ञापन हो गया तो शायद सही होगा। मैंने डेविड की किताबों से बहुत कुछ सीखा है और मुझे यकीन है कि प्राथमिक शालाओं में पढ़ रहे बच्चे भी इनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं । जो लोग पाठ्यक्रम बनाने व किताबें लिखने में जुटे हैं उन सभी के लिए यह बहुत आवश्यक उदाहरण हैं । बिना बहुत से रंगों के, सिर्फ रेखाचित्रों से भी आकर्षक किताब बनाई जा सकती है और उसमें बच्चे को करने को बहुत कुछ छोड़ा जा सकता है । किन्तु जैसा मैंने कहा, ऐसी किताब को इस्तेमाल करने के लिए शिक्षा के ढांचे को और उससे जुड़े तामझाम को भी मेहनत करनी पड़ेगी । जब ऐसा होगा तब इन किताबों में परिवर्तन की आवश्यकता पड़ेगी और इसकी कमजोरियां सामने आएंगी, फिलहाल तो यह एक आदर्श हैं जिससे हम सीख सकते हैं । ◆